P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-3* June - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मातृक कार्यकारी स्थिति का किशोरों में विषादजनित लक्षणों के विकास पर प्रभाव

Effect of Maternal Executive Status on The Development of Symptoms of Depression In Adolescents

Paper Submission: 20/06/2020, Date of Acceptance: 28/06/2020, Date of Publication: 30/06/2020

नेहा दीक्षित
व्याख्याता
मनोविज्ञान
जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (DIET)
कन्नौज, उत्तर प्रदेश, भारत

निरंजना शुक्ला
पूर्व विभागाध्यक्षा,
मनोविज्ञान विभाग,
जुहारी देवी गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

बाल्यकालीन विकास में एक बालक के किशोर के रूप में परिणत होने के लिये परिवर्तन अप्रत्यक्षीकृत रूप में होते है। किशोरावस्था विकास के दौरान एक अद्वितीय संक्रान्ति अवस्था है। आज किशोरों में विषादजन्य लक्षणों अकेलापन, असहायता, असुरक्षा, निराशावादिता इत्यादि लक्षण पूरी तरह से दृष्टिगत न होते हुये भी कहीं न कहीं अल्प–विकसित अवश्य ही होते है। किशोरावस्था में मॉ का संरक्षण तथा सानिध्य किशोरों में विषाद जन्य लक्षणों की उपादेयता को कम या नगण्य करने में सक्षम है मॉ का कार्यकारी होना उनके बच्चों के व्यक्तित्व विकास को जहॉ एक ओर सन्तुलित आयाम दे सकता है वहीं अवसादी प्रवृत्ति की ओर प्रवृत्त भी कर सकता है। प्रस्तुत अध्ययन व्यवसायरत मॉओं की कार्यप्रकृति का प्रभाव उनके किशोर बच्चों में विषादजन्य लक्षणों के विकास पर देखने हेतु किया गया है जिसके अन्तर्गत 100 कार्यकारी माताओं की दो विभिन्न कार्यकारी स्थितियॉं– पारम्परिक व अपारम्परिक को आधार बनाया गया।

In childhood development, changes occur indirectly in order to transform a child into a teenager. Adolescence is a unique transition phase during development. Today, the symptoms of loneliness, helplessness, insecurity, pessimism, etc. in teenagers, despite being not fully visible, are under-developed somewhere. Conservation of mother and adolescent is able to reduce or negligence the symptoms of depression in adolescence. Being a mother can give a balanced dimension to the personality development of their children, but can also lead to sedentary behavior. . The study presented has been done to see the impact of the working mothers' behavior on the development of symptoms of depression in their adolescent children, under which two different working conditions of 100 working mothers - traditional and non-traditional - were made.

मुख्य शब्दः मातृक कार्यकारी स्थिति–पारम्परिक तथा अपारम्परिक, विषाद
Maternal Executive Status - Traditional and Unconventional, Depression

प्रस्तावना

मानव जीवन विकास की प्रक्रिया में हर अवस्था का स्वमहत्व उल्लेखनीय है, किन्तु जीवन के प्रारम्भ में शैशवास्था, बाल्यावस्था के उपरान्त आने वाली किशोरावस्था विशेष रूप से महत्व रखती है, यह एक ऐसी अवस्था है जब व्यक्ति 'वयस्कता की ओर अपनी उपस्थिति हेतु स्व क्रियाओं' को उन्मुखता प्रदान करता है, परन्तु साथ ही इस अवस्था में होने वाली सम्पूर्ण क्रियाओं का दिशानिर्धारण व सम्पूर्ण क्रिया–कलापों के मध्य उचित साम्य बनाये रखना प्रायः किशोर वर्ग के लिए जटिलतापूर्ण कार्य ही सिद्ध होता है। यद्यपि किशोरावस्था निश्चित रूप में रूपान्तरण अथवा कायान्तरण नही है परन्तु जैविक या शारीरिक परिवर्तनों का होना मनोवैज्ञानिक विकास की स्थिति के लिए एक निश्चित आधार प्रस्तुत करते है विशेष रूप से जब यह परिवर्तन बड़ी सामाजिक प्रमुखता को प्रदर्शित करते हों। किशोरों के विषय में उपरोक्त तथ्य यह प्रदर्शित करते हैं कि अनेक शारीरिक परिवर्तन किशोरों में विविध मनोवैज्ञानिक असन्तुलन के वाहक बनते है वस्तुतः किशोरवय में किशोर, दो विरोधाभासी चित्त प्रवृत्ति के मध्य दोलन

करते हैं। किशोरावस्था को एक अपूर्वानुमानित व्यवहार के रूप में चिन्हित किया जा सकता है, जिसमें मन अथवा चित्त का उतार–चढ़ाव, अत्याधिक दुःख व निराशा की अवस्था प्रमुख है। मूलतः किशोरावस्था एक व्यक्ति के जैव सामाजिक स्थिति का संक्रान्ति काल है। यह एक ऐसी अवधि है जिसके दौरान उस व्यक्ति के कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों, विशेषाधिकार तथा अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बन्धों में विशेष परिवर्तन दृष्टिगत होता है, उपरोक्त प्रकार की स्थितियों के अर्न्तगत स्वंय के प्रति माता–पिता, सगे–सम्बन्धियों तथा अन्य के प्रति दृष्टिकोण रोषपूर्ण हो जाते हैं।

वर्तमान समय में आधुनिक किशोर खुशी से दूर, उदासीन, मुरझाये हुये, दिग्भ्रमित तथा अपर्याप्तता की अनुभूति से पीड़ित हैं। वर्तमान समय में किशोरावस्था का काल अनेक मानसिक तनावों के चलते, विषाद जनित लक्षणों को अनायास ही आमन्त्रण दे रहा है जो कि वयस्क व्यक्तित्व विकास के लिए शुभ संकेत नही कहा जा सकता। विषाद को लक्षणों के विशिष्ट समूह के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसमें विषादी चित्तवृत्ति, शयन सम्बन्धी परेशानियॉ, विचार सम्बन्धी परेशानियॉ, व्यर्थता की भावना, सामाजिक रूप से कार्य करने की अयोग्यता व ऊर्जा की कमी प्रमुख है। विषाद मुख्यतः निर्भरता के भाव, असहायता, महत्वाकांक्षा के लिये संघर्ष तथा अपराधबोध के भावों में प्रदर्शित होता है। विषादी अनुभवों को दो विमाओं के आधार पर विभेदीकृत किया गया–विश्लेषणात्मक तथा आत्म–छिद्रान्वेषी अथवा आलोचनात्मक विमायें। विश्लेषणात्मक विषाद विमा को असहायता के भाव, दुर्बलता तथा छोड़ देने के भय तथा अन्तःक्षेपण के अर्न्तगत श्रेणीबद्ध किया गया तथा आत्म–आलोचक विमा के अर्न्तगत प्रतियोगिता की तीव्र भावना, व्यर्थता, अपराध बोध तथा स्थिर आत्म–मूल्यांकन को रखा गया।

माता–पिता, जो कि शैशवावस्था से लेकर अन्य विकासशील अवस्थाओं में बालक या बालिका की व्यक्तित्व संरचना, स्वभावगत विशेषताओं तथा समायोजनपूर्ण जीवन शैली व सन्तुलित आचार–विचार में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, के उचित मार्गदर्शन, प्रेरणाओं, शिक्षाओं का केन्द्र निश्चित रूप से किशोरावस्था में किशोर अथवा किशोरी होते हैं। नई सहस्राब्दी में नारी की एक सर्वथा नई छवि उभर रही है। पिछली सदियों में जो बेड़ियॉ उसे जकड़े थीं, उन्हे तोड़ आज वह अपनी नई पहचान बनानें में जुटी हैं। विगत कल तक जो क्षेत्र केवल पुरूषों के क्षेत्र माने व समझे जाते थे, वहाँ पर भी नारी–चेतना ज्वलंत रूप से प्रदीप्त हो उठी है। घर की घुटन भरी चारदीवारी अब प्रायः टूट चुकी है। कल की साधारण सी गृहिणी आज कुशल प्रबंधक बनकर अपने कार्यो–दायित्वों का निर्वहन कर रही है। समझदारी, साहस एंव सक्रियता जैसे अनुदान इसी का परिणाम है। आजकी नारी परम्परागत मूल्यों का निर्वाह करते हुये भी अपनी विशिष्ट पहचान बना रही है। जीवन की विभूतियों के आदान – प्रदान में वह संवेदनशील एंव जागरूक है। वर्तमान समय में नारी जीवन में आत्मनिर्भरता का आना एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है। किन्तु जहॉ एक ओर नारी जीवन में आत्मनिर्भरता का आना एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है, वहीं पारिवारिक व व्यवसायिक रूप से दोहरी भूमिका निर्वाह सम्बन्धी अपेक्षाओं ने उसकी मनोवैज्ञानिक समस्याओं को जटिलता के साथ उकेरा है।

एक परिवार का सामाजिक स्तर परिवार के सदस्यों के जीविका सम्बन्धी साधन द्वारा पूर्ण रूप से निर्धारित होता है। हाल के वर्षों में, विवाहित महिलाओं में इस प्रवृत्ति की ओर उन्मुखता आयी है कि जब उनके बच्चे विद्यालय जाने वाले आयु वर्ग में प्रवेश ले लेते है तथा जब उनको कम देखने व सुरक्षा की जरूरत होती है, तब मॉ अक्सर व्यवसायरत हो जाती है। वास्तविकता यह है कि सामाजिक स्तर के दृष्टिकोण से पिता का व्यवसाय अथवा नौकरी भले ही ज़्यादा महत्वपूर्ण होती हो परन्तु घर का माहौल कैसा होगा? इसका निर्धारण मुख्यतः मॉ के ही व्यवसाय से होता है।घर का वातावरण, एक बच्चे से लेकर किशोरावस्था तक एक ऐसा परिवेश प्रदान करता है जिसमें उस किशोर के व्यक्तित्व प्रतिमान, मानसिक स्वास्थ्य, नैतिकता सम्बन्धी धारणायें, प्रेरणायें, आकांक्षाये इत्यादि आकार गृहण करते हैं। मॉ का व्यवसायरत होना जहॉ एक ओर आर्थिक रूप से परिवार को आर्थिक सुरक्षा के साथ उन्नयन प्रदान करता है वहीं उसकी कार्य–स्थिति का स्पष्ट प्रभाव उसके अपने बच्चे के साथ अन्तः क्रिया को भी अवश्य ही प्रभावित करता है। कार्य का पारम्परिक छवि के अनुकूल अथवा प्रतिकूल होना, समयावधि का न्यूनतम या अधिकतम होना, अधीनस्थ कर्मचारियों, सहयोगियों का सहयोग, अल्प सहयोग या असहयोग वर्तमान में व्यवसाय के मूल्य इत्यादि कई तथ्य है जिनका स्पष्ट प्रभाव उनके किशोर बच्चों में अवश्य ही परिलक्षित होता है। किशोरो में होने वाले परिर्वतन जो कि शारीरिक आधार के फलस्वरूप होते हैं तथा जिनका व्यापक परिणाम मानसिक रूप से असमंजसपूर्ण स्थिति द्वारा व्यक्त होता है। उन स्थितियों में मॉ का संरक्षण तथा सानिध्य किशोरों में विषादजन्य लक्षणों की उपादेयता को कम या नगण्य करने में सक्षम है किन्तु मॉ का कार्यकारी होना निश्चय ही जहॉ एक ओर उनके बच्चों के व्यक्तित्व विकास को सन्तुलित आयाम दे सकने में सक्षम है वहीं दूसरी ओर अवसादी व्यक्तित्व की ओर प्रवृत्त भी कर सकता है।

मॉ के साथ अत्याधिक अन्तःक्रिया होने के कारण मॉ का प्रभाव बच्चों पर ज़्यादातर पड़ना स्वाभाविक ही है, **प्रस्तुत अध्ययन मॉ की व्यवसायिक विशिष्टता का प्रभाव उनके किशोर बच्चों में उत्पन्न होने वाले विषादजनित लक्षणों के प्रार्दुभाव सम्बन्धी समस्याओं के सन्दर्भ में है।** महिलाओं के लिये शिक्षण कार्य, सर्वोचित कार्य है, यही एक ऐसा कार्य है जिसमें स्त्री के पारम्परिक मूल्यों के साथ कोई अर्न्तद्वन्द नहीं रहता, इसके पीछे मुख्यतः इस कार्य में अल्प समयावधि का होना तथा लम्बे अवकाशों का होना है। शिक्षण कार्य एक ऐसा कार्य है जिसके रहते हुये एक महिला, एक मॉ तथा कुशल गृहिणी की भूमिका निर्वाह कर सकती है। जबकि कार्यालय में कार्यरत होना उसके पारम्परिक मूल्यों के विपरीत दृष्टिगत होता है, लम्बी कार्य अवधि व अवकाशों का कम होना तथा कार्य–प्रकृति का स्त्रीगत स्वाभाविक विशेषताओं के

प्रतिकूल होना भूमिका निर्वाह सम्बन्धी जटिलताओं को जन्म देता है। व्यवसायगत इन्हीं भिन्नताओं के अलग–अलग स्वरूपों का उनके किशोर बच्चों में विषादजन्य लक्षणों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है यह देखना इस अध्ययन का एक प्रमुख बिन्दु है। प्रस्तुत अध्ययन व्यवसायरत मॉओं की कार्यप्रकृति का आक्षेप, उनके किशोर बच्चों में विषादजन्य लक्षणों के विकास पर देखने हेतु किया गया है। समाज में आज किशोरों में अकेलापन, असहायता, असुरक्षा, निराशावादिता इत्यादि लक्षण पूरी तरह से दृष्टिगत न होते हुये भी कहीं न कहीं अल्प–विकसित अवश्य ही होते है। किशोरों में विषादी लक्षणों के विकास के उद्‌गम में, मॉ का पारम्परिक या अपारम्परिक कार्यकारिता में होनो, प्रभावी हो रहा है अथवा नहीं, यह जानना शोधार्थिनी की प्रमुख रूचि है जिससे समस्या को पहचान कर काफी हद तक किशोरों में इस वृत्ति से सम्बन्धित लक्षणों के उन्मूलन में प्रयास किया जा सके।

समस्यात्मक कथन

प्रस्तुत शोध–पत्र का विषय है, ''मातृक कार्यकारी स्थिति का किशोरों में विषादजनित लक्षणों के विकास पर प्रभाव''।

यान्त्रिक परिभाषायें

इस योजना कार्य में किशोर बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास का अध्ययन किया गया तथा अग्राकिंत अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया जिनको परिभाषित करने की आवश्यकता है।

1. विषाद
2. मॉ की कार्यकारी स्थिति

विषाद

विषाद शब्द अनेक लक्षणों के समूह को प्रकट करता है। विषाद, दुःख या निराशा की वह तीव्र भावना है जिसमें व्यक्ति अकेलेपन का अनुभव करता है, व्यर्थता, असहायता, निराशावादिता, पलायनवाद, असुरक्षा, अपराधबोध, आत्मसंतुष्टि का अभाव, दण्ड का बोध, आत्मघृणा, असफलता का भाव, आत्मअभियोग, कार्य में रूकावट, निद्रा सम्बन्धी परेशानियॉ, थकावट, भूख में कमी, वजन में गिरावट, दैहिक विकार, रोषपूर्णता, अनिर्णयपूर्ण स्थिति, दोषपूर्ण शारीरिक प्रतिमा सम्बन्धी अनुभव करता है।

बेक के अनुसार विषाद में संज्ञानात्मक विशेषतायें, स्वयं में, स्थिति के प्रति दोषपूर्ण प्रत्यक्षीकरण को अभिव्यक्त करती हैं। विषादी व्यक्ति धनात्मक व्याख्या की अधिक सम्भावना होते हुये भी स्थितियों की व्याख्या तथा उसका प्रत्यक्षीकरण नकारात्मक तरीके से करता है। ऐसे व्यक्तियों जिन में यह देखने में आता है कि ये जब नये कार्यो को हाथ में लेते हैं तब उन कार्यो के विषय में पराजय, वंचन तथा हार की ही आशा करते हैं इस प्रकार ऐसे व्यक्ति वातावरण के साथ अन्तःक्रिया को दोषपूर्णता के साथ निर्माणित करते हैं। विषादी व्यक्ति के तथ्य उनके नकारात्मक निष्कर्षों के साथ उचित होते है, तथा अधिक गम्भीर विषाद के मामलों में विचार प्रक्रियायें वाह्य परिणामों में अप्रतिक्रियापूर्ण हो जाती है (बेक व उनके सहयोगी, 1979)।

यह आवश्यक नहीं है कि अध्ययन के विषय, किशोरो में विषाद के सभी लक्षणों की उपस्थिति हो, परन्तु यह अवश्य है कि लक्षणों का अल्प अथवा वृहद स्तर पर विकास हो अर्थात व्यक्तित्व में उन लक्षणों की उपस्थिति हो। विषाद को लक्षणों की सहायता से मध्य किशोरावस्था के किशोर व किशोरियों मे पहचानना तथा अन्य चरों के प्रभावोनुरूप इनके विकास की सम्भावना को जानना यह प्रस्तुत शोध–पत्र का केन्द्र बिन्दु है।

मॉ की कार्यकारी स्थिति

वर्तमानकाल महिलाओं के उत्तरोत्तर विकास का युग है, आज महिलाओं का व्यवसायरत होना आम बात है तथा महिलाओं का व्यवसायरत होना उनको स्वयं में आत्मविश्वास प्रदान करने में कारक भी सिद्ध हुआ है। आज महिलायें किसी भी क्षेत्र में पीछे नही है पूर्व में कुछ व्यवसाय जो उनके स्त्रीयोचित गुणों के अनुकूल माने जाते थे यथा शिक्षिका, चिकित्सिका इत्यादि जो सम्मान के साथ स्त्रियों के परम्परागत व्यवसायों में आते थे, आज इनके अतिरिक्त अपरम्परागत व्यवसायों के अर्न्तगत कार्यालय सम्बन्धी व्यवसाय, पुलिस, पायलट इत्यादि सेवाओं में भी उनका पदार्पण हो चुका है। मॉ का परम्परागत अथवा अपरम्परागत रूप में व्यवसायरत होना उनके बच्चों में मॉ के साथ सफल या असफल रूप में अन्तःक्रिया के परिणामस्वरूप कौन से स्वभावगत विषाद संबंधी लक्षणों को जन्म देता है अथवा विकास करता है यह एक अध्ययन का विषय है।

परम्परागत व्यवसाय अथवा सेवा का अर्थ इस अध्ययन में मॉ की 'शिक्षिका' की छवि से है इसके अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालय की 'प्रवक्ता' पद की शिक्षिकाओं का चयन किया गया तथा अपरम्परागत सेवा के अन्तर्गत कार्यालय में कार्यरत 'लिपिक' पद पर कार्यरत महिलाओं का चयन किया गया, तथा उनकी भिन्न कार्यस्थिति का प्रभाव उनके किशोर बच्चों के विषादजनित लक्षणों के विकास पर देखा गया।

मॉ का पारम्परिक या अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति में बने दबाबों के परिणामस्वरूप किशोर में विषादजनित लक्षण तो उत्पन्न नही हो रहे ? या जब किशोरों को किशोरावस्था के दौरान शान्त चित्त व मनःस्थिति व उत्तम मानसिक विचारों की चाह होती है जो उनका मार्ग प्रशस्त कर सके तब उस स्थिति में मॉ का व्यस्तम् जीवन नौकरी व पारिवारिक कार्यों के दबावो में उनके किशोर बच्चों को एकाकीपन जैसे विषादी लक्षणों को आमन्त्रण तो नही दे रहा? यह देखना वर्तमान अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है तथा वर्तमान स्थितियों में मॉ की विशिष्ट कार्यस्थिति का उनके किशोर बच्चों के विषादजनित लक्षणों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है?यही प्रश्न है जिसके उत्तर हेतु प्रस्तावित अध्ययन को क्रियान्वित किया गया है।

साहित्यावलोकन

मॉ का कार्यरत होना हमेशा परिवार की सामान्य अवस्था को प्रभावित करता है। मॉ के कार्यकारी होने के परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य मॉ के द्वारा वाह्य काम करने से, पिता की तुलना

में अधिक गम्भीर रूप से प्रभावित होता है (Blood, R.O., 1965; Siegel, A.E.; And M.B. Hass, 1967)A

बचपन में जब बच्चा मॉ के घर में रहने के साथ अनुकूलित हो जाता है तथा इसके उपरान्त जब मॉ व्यवसायरत हो जाती है तब परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ किशोर पुर्नसमायोजन के अन्तर्गत परिवर्तन के कारण निश्चय रूप से प्रतिबल का अनुभव करता है (Maccoby, E.E., 1958; Perry, J.B., 1961; Radke Yarrow,M., P. Scott, L. Deleeuw And C.Heinig, 1962) ।

एक अन्य अध्ययन में देखा गया कि कामकाजी मॉये अपने बच्चों से उच्च आकांक्षाये रखती है जिससे उन पर अकार्यकारी मॉओ के बच्चों की तुलना में अधिक दबाव हो जाता है, क्योंकि घर से बाहर कार्य करने के पश्चात् वे थकी व खीजने वाली हो जाती है अतः वह घर में बच्चों के लिये अकार्यकारी मॉओं की तुलना में कम कार्य कर पाती है तथा वह उनकी समस्याओं को सुनने व राय देने के लिये कम ही उपलब्ध हो पाती है (Blood, R.O., 1965; Hoffman, L.W. 1961; Powell, K.S., 1961; Rouman, J., 1956; Vonmehring,F.H., 1955) |

किशोर बच्चों की अक्सर यह शिकायत रहती है कि ''मॉ के कार्यकारी होने पर वे पूरे दिन बाहर रहने पर तथा वापस घर लौटने पर जब रात में सभी थके हुये होते है ऐसे में पारिवारिक जीवन कुछ नही होता'' (Fleege, U.H., 1945) |

मॉ का नौकरी पेशा होना कभी तो अनुकूल होता है परन्तु प्रतिकूल होने पर किशोर बच्चों को बाल अपराधी बनने तक की श्रेणी में ला सकता है तथा वह अति समस्यात्मक व्यवहार को किशोरों में जन्म दे सकता है, इस तथ्य से सम्बन्धित कम घटना क्रम ही सामने आते है कि किशोर बाल अपराधी की श्रेणी में आये परन्तु उनमें असामाजिक व्यवहार की प्रवृत्ति अवश्य ही देखी जाती है (Meek, L.S. 1960; NYE, F.I., 1959) |

Montemayor, - Raymond; Clayton, - Mark - D (1983) ने अपने अध्ययन में यह प्रेक्षित किया कि मॉ का नौकरी पेशा होना तथा किशोरों के विकास का सम्बन्ध बहुत जटिल है मॉओ के द्वारा श्रमशक्ति के क्षेत्र में प्रवेश लेने के कारण मातृक कार्यकारिता की स्वीकार्यता में वृद्धि हुयी है परन्तु इसके, किशोरों में कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने में आते हैं।

Morgan, - Mark; Gruve, Joel (1987) के अध्ययनानुसार मातृक कार्यकारिता का परिणाम किशोरो के व्यवहार तथा दृष्टिकोणों पर देखने में यह सामने आया कि जिन किशोरों की मॉ, घर तथा नौकरी में एक साथ कार्यरत थी, इस प्रकार उन्होने अपनी पारम्परिक छवि के प्रतिकूल (जो कि घरेलू महिलाओं की होती है) अपना दायरा बढ़ा रखा था, में यह देखा गया कि उनके किशोर बच्चों में असामाजिक व्यवहार, आत्म–प्रतिमा सम्बन्धी दोष या द्रव्य व्यसन जैसे दोषो का अभाव था, अतः इस अध्ययन में यह देखा गया कि कार्यकारी मॉये, उन मॉओं की तुलना में बिल्कुल अपर्याप्त नही थी जो कि घर में रहकर बच्चों की देखभाल करती थी।

Amato, -Paul -R. (1987)ने अपने अध्ययन में मातृक कार्यकारिता का प्रभाव बच्चों के पारिवारिक सम्बन्धों तथा विकास पर देखा। अध्ययनकर्त्ता ने 402 बच्चों तथा किशोरो जिनकी मॉ अकार्यकारी थी, अंशकालिक नौकरी में थी तथा पूर्णकालिक नौकरी में थी, की तुलना की। परिणामस्रूप यह सामने आया कि जो मॉ पूर्णकालिक रूप से नौकरी पेशा थी उनके किशोर बच्चों में सक्षमता ज्यादा थी ऐसे किशोर बच्चों ने निपुणता के मापन में सबसे उच्च अंक प्राप्त किये।

Richards, -Maryse -H.; Duckett, -Elena (1994) ने अपने अध्ययन में यह परिलक्षित किया कि मातृक कार्यकारिता, पूर्व किशोर बच्चों के प्रतिदिन के जीवन के अनुभवों को आकार प्रदान करती है। उन बच्चों (जिनकी मॉ अंशकालिक नौकरी से सम्बन्धित थी) में प्रतिदिन की ज्यादा घनात्मक मनोवृत्ति देखी गयी तथा मॉ के साथ बच्चों की ज्यादा मित्रता पाई गयी तथा जिन बच्चों की मॉ पूर्णकालिक कार्यकारिता से सम्बन्धित थी उन बच्चों में यह देखा गया कि वे अपना अधिकांश समय अकेले अपने पिता के साथ व्यतीत करते है तथा साथ ही अकेलेपन का अनुभव भी करते है।

Rao, - P. - Rama; Parvathi, - S.; Swaminathan, - V.-D. (1983) ने अपने अध्ययन में यह देखा कि किशोर बच्चों की अध्ययन सम्बन्धी आदतों, एकाग्रता की आदतों, समय के विभक्तीकरण या सामाजिक सम्बन्धों पर मॉ के नौकरी पेशा होने का कोई प्रभाव नही पड़ता है।

Jensen, - Larry; Borges, - Marilyn (1986) ने अपने अध्ययन में मातृक कार्यकारिता का प्रभाव किशोर बालिकाओं पर यह देखा कि जिन बेटियों की मॉ अकार्यकारी थी, यह सामने आया कि मॉ के अकार्यकारी होने के कारण माता पिता के मध्य कम क्रोध, प्रतिबल तथा तनाव होता है।

'विषाद'

समकालीन शोध विषादजनित असामान्यता के सन्दर्भ में तीन सूत्रों के प्रभाव में क्रियान्वयन को प्रदर्शित करते हैं –

1. विषाद को एक संज्ञानात्मक प्रत्याशा के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसके अन्तर्गत स्वयं के प्रति, संसार के प्रति तथा भविष्य के प्रति नकारात्मक दृष्णिकोण शामिल होते हैं (Beck, 1970, 1974)।
2. विषाद एक अर्जित असहायता की अवस्था है जिसमें ण्क व्यक्ति के द्वारा अपने जीवन के घटनाक्रमों को नियन्त्रित करने सम्बन्धी अयोग्यता शामिल होती है (Seligman, 1974, 1975)।
3. विषाद एक व्यक्ति की ऐसी अयोग्यता को प्रदर्शित करता है जिसमें वह धनात्मक पुनर्बलन की प्राप्ति हेतु सापेक्ष व्यवहार को नहीं कर पाता (Lewinsohn, 1974a, 1974b)।

किशोरो के सम्बन्ध में विषाद का साहित्य बहुत ही सीमित है तथा अक्सर विरोधाभासी है। किशोरों में विषादी भाव, संवेगात्मक विघटन के रूप में प्रगट होता है। यद्यपि किशोरावस्था में विषाद का निर्धारण नकारा जाता है (Gallemore & Wilson, 1972) पिछले

कुछ दशकों में किशोरों में विषाद का घटनाक्रम तीव्रता से देखने में आ रहा है।

Inamdar et al. (1979) ने भी एक अध्ययन 30 रोगियों पर किया जिनकी आयु का प्रसार 12 से 18 वर्ष था। इनमें 50% से ज्यादा ने यह सूचना दी कि वे अकेलापन महसूस करते हैं तथा अनानुभूति, पलायन अनुभव करते है, 37% शारीरिक लक्षण (सिरदर्द, पेट दर्द, मॉसपेशियों में खिचाव, कब्ज तथा घुंघलापन) का अनुभव करते है।

Rutter, et al. (1970, 1981) ने युवा बच्चों तथा किशोरों में विषाद के घटनाक्रम तथा विकास का अध्ययन किया। अध्ययनकर्ता ने यह पाया कि 14 से 15 वर्ष की आयु में विषादी स्थितियॉ अधिक तीव्रता लिये हुये होती हैं अपेक्षाकृत जब यही किशोर बाल्यावस्था में होते हैं।

समान परिणाम Albert and Beck (1975) द्वारा प्राप्त किये गये। उन्होने पाया कि विद्यालय में 33.3% बच्चे, औसत से गम्भीर विषाद का अनुभव कर रहे थे तथा 35% प्रतिदर्श आत्महत्या के विचारों से ग्रस्त था। Simmons, et al. (1973)ने अपने अध्ययन में यह पाया कि प्रारम्भिक किशोर (जिनकी आयु 12 से 14 वर्ष की है) कम उम्र के बच्चों से ज्यादा विषादी होते हैं।

Beck and Young (1978) ने उन बच्चों में विषाद के स्तर का अध्ययन किया जो विद्यालय छोड़ने वाले थे। उन्होने पाया कि एक तिहाई विद्यालय से निकलने के ठीक पहले गम्भीर विषाद से पीड़ित थे।
किशोरावस्था के वर्षो में जब बालक व बालिकायें यह अनुभव करते है कि वे अपनी आवश्यकता से कम माता–पिता का स्नेह पा रहे हैं तब वे स्वंय को दुःखी व उपेक्षित महसूस करते है (Iazzetta, V.B., 1961; MUSSEN, P.H. et al. 1958) । सम्बन्धों की तुलना में घर का असामान्य वातावरण किशोर को दुःखी रखने में ज्यादा महत्वपूर्ण है जो कि खराब सम्बन्धों का ही परिणाम होता है (New York Times Report, 1960)A

Barnett, - Rosalind -C.; Marshall, - Nancy - L. (1992) का अध्ययन मातृक व्यवसाय तथा मिश्रित भूमिकाओं की गुणवत्ता से सम्बन्धित था। अध्ययन के निष्कर्षतः यह सामने आया कि विभिन्न मातृक भूमिकाओं के परिणामस्वरूप मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी नकारात्मकता सामने आती है जिसके कारण पारिवारिक सम्बन्ध कष्टपूर्ण हो जाते है।

उद्देश्य

किशोर बच्चे, जिनकी मॉ अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्ध हैं, उनमें विषाद के स्तर का अध्ययन करना।

उपकल्पना

मॉ की अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति का किशोर बच्चों के विषादजनित लक्षणों के विकास पर धनात्मक प्रभाव पडता है।

शोध प्रविधि

प्रतिदर्श

यह अध्ययन 100 महिलाओं के प्रतिदर्श पर किया गया जो कि इण्टर कालेज की 'प्रवक्ता' तथा कार्यालय में 'लिपिक' पद पर कार्यरत महिलायें थीं। मां की कार्यकारी स्थिति का किशोर बच्चों में विषाद जनित लक्षणों के विकास पर प्रभाव का अध्ययन करने हेतु, महिलाओं के प्रतिदर्श को 2 समूह में गठित किया गया, दो स्तर के नाम दिये गये –

कार्यकारी स्थिति

1. पारम्परिक कार्यकारी स्थिति
2. अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति

100 महिलाओं के प्रतिदर्श को 2 बराबर समूह में, (प्रत्येक समूह में 50 महिलायें) विभक्त किया गया। प्रतिदर्श का चयन इस प्रकार किया कि महिलायें कार्यालय में 'लिपिक' पद व माध्यमिक विद्यालय में 'प्रवक्ता' पद पर कार्यरत हो, उनकी आयु 35 से 45 के मध्य हो, वेतन (8000-14000) तथा उनके किशोर बच्चों की आयु 14 से 16 एवं तथा शिक्षा का माध्यम I.C.S.E. या C.B.S.E. ही हो।

उपकरण

Beck's Depression Inventory

किशोर बच्चों में विषाद के लक्षणों के अध्ययन हेतु Beck द्वारा निर्मित सूची का प्रयोग किया गया। विषाद की इस सूची में 20 प्रकार की शाखाओं में कथन संरचित है। विषाद की सूची में दिये गये बिन्दु, अलग–अलग विषाद के लक्षणों को दर्शाते हैं। इन लक्षणों में प्रमुख रूप से शर्मीलापन, उदासी, निराशावादिता, असफलता का भय, असंतुष्टि, अपराध बोध, दण्ड की आशा, आत्म घृणा, आत्म अभियोग, आत्महत्या सम्बन्धी विचार, विलाप, चिड़चिड़ापन, सामाजिक पलायन, अनिर्णय, शारीरिक प्रतिमा परिवर्तन, कार्य रोध या रूकावट, अनिद्रा, थकान, भूख में कमी, वजन का गिरना, दैहिक चिन्ता वर्णित है।

प्रद्दत्त एकत्रीकरण

अध्ययन के उद्देश्य से कार्यालय में कार्यरत महिलाओं तथा विद्यालयों में प्रवक्ता पद की शिक्षिकाओं से प्रद्दतों के एकत्रीकरण हेतु सहयोग के लिए निवेदन किया। सर्वप्रथम उनको व्यक्तिगत विवरण प्रपत्र भरने हेतु दिया गया जिनको उन्होने पूरित कर दिया। इसके उपरान्त उद्देश्यपूर्ण ढ़ंग से इच्छित महिलाओं को चयनित किया गया तत्पश्चात् उनके किशोर बच्चों को बेक द्वारा निर्मित Beck's Despression Inventory भरने को दी गयी।

सांख्यकीय विश्लेषण

मातृक कार्यकारी स्थिति के प्रभाव का उनके किशोर बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास के सन्दर्भ में अध्ययन हेतु 100 महिलाओं के प्रतिदर्श को दो समूहों में जिनमें प्रत्येक में 50 महिलायें थी, को अध्ययन किया गया तथा सम्बन्धित प्रद्दत एकत्रित किये गये। प्रस्तुत अध्ययन में समुहांतर अभिकल्प (Between Group Design) का प्रयोग करते हुए दो समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रान्तिक अनुपात(Critical Ratio) का उपयोग किया गया।

परिणाम

प्रद्दत्तों के एकत्रीकरण, उनकी गणना तथा सांख्यिकीय विश्लेषण के उपरान्त निम्न परिणाम प्राप्त किये गये.

मातृक कार्यकारी	N	M	SD	SED	Critical Ratio	Inference

स्थिति समूह	(प्रयोज्यों की सं0)	(मध्यमान)	(मानक विचलन)	(मानक विचलन की त्रुटि)	(क्रांतिक अनुपात)	(अनुमान)
पारम्परिक कार्यकारी स्थिति	50	10.26	5.33	1.184	2.179	t>0.05
अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति	50	7.68	6.46			

परिणाम तालिका को देखने से यह स्पष्ट होता है कि पारम्परिक कार्यकारी स्थिति का मध्यमान (10.26), अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति के मध्यमान (7.68) से ज्यादा है जिससे यह प्रदर्शित होता है कि मातृक अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति की तुलना मे मातृक पारम्परिक कार्यकारी स्थिति का बच्चों के विषादजनित लक्षणों के विकास पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। यह देखने के लिये कि दोनों समूहों के मध्य अन्तर सार्थक है अथवा नहीं, क्रांतिक अनुपात (Critical Ratio) प्राप्त किया गया।क्रांतिक अनुपात (2.179) विश्वास्य स्तर .05 पर सार्थक है। इसके द्वारा यह निर्धारित होता है कि चर 'विषाद' के परिप्रेक्ष्य में मातृक कार्यकारी स्थिति (Maternal Work Status) के आधार पर दोनों समूहों ;पारम्परिक व अपारम्परिक के मध्य विभेद है।

मध्यमानों के परीक्षण के उपरान्त यह सामने आता है कि पारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्व महिलाओं की तुलना में अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्व महिलायें उनके बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास के सन्दर्भ में अधिक श्रेष्ठ हैं, अर्थात् अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्व मॉंओं के बच्चों में विषादजनित लक्षण अपेक्षाकृत कम देखने में आते हैं। इस प्रकार हमारी उपकल्पना गलत सिद्व होती है जिसके अनुसार '' मातृक अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति का उनके बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास पर, मातृक पारम्परिक कार्यकारी स्थिति की तुलना में धनात्मक प्रभाव पड़ता है''। अतः हमारी उपकल्पना आंकिक निष्कर्षों के परिप्रेक्ष्य में अस्वीकृत होती है।

व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में मातृक कार्यकारी स्थिति – पारम्परिक व अपाम्परिक को अध्ययन किया गया है तथा परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि मातृक पारम्परिक कार्यकारी स्थिति का किशोर बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है।अतरू यह निश्चित होता है कि पारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्व मॉंओं के किशोर बच्चों में, अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्व मॉंओं के बच्चों से ज्यादा विषादजनित लक्षणों के विकास की सम्भावना रहती है।

वर्तमान अध्ययन के परिणाम, पूर्व में हुए कुछ शोधों के परिणामों के मध्य साम्यता को प्रदर्शित करते हैं। इन पूर्व में किये गये अध्ययनों में Blood, R.O., 1965; SIEGEL, A.E.; And M.B. HASS, 1967 MACCOBY, E.E., 1958; PERRY, J.B., 1961; RADKE YARROW,M., P. SCOTT, L. DELEEUW AND C.HEINIG, 1962 BLOOD, R.O., 1965; HOFFMAN, L.W. 1961; POWELL, K.S., 1961; ROUMAN, J., 1956; VONMEHRING,F.H., 1955 FLEEGE, U.H., 1945 MEEK, L.S. 1960; NYE, F.I., 1959 Montemayor, - Raymond; Clayton, - Mark - D (1983) Morgan, - Mark; Gruve, Joel (1987) Amato, -Paul -R. (1987) Richards, -Maryse -H.; Duckett, -Elena (1994) (Beck, 1970, 1974) (Seligman, 1974, 1975) (Lewinsohn, 1974a, 1974b) Gallemore & Wilson, 1972 Inamdar Et Al. (1979) शोधकर्त्ताओं का योगदान दृष्टिगत होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किशोरों में विषाद का होना तथा विषादजनित लक्षणों के विकास का होना, प्रासंगिक है परन्तु मातृक पारम्परिक कार्यकारी स्थिति तथा मातृक अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति अथवा मातृक अकार्यकारी स्थिति का प्रभाव, किशोरों में विषादजनित लक्षणों के विकास पर होना अवश्यम्भावी नहीं है अतः वर्तमान शोध अध्ययन के साथ Rao, - P. - Rama; Parvathi, - S.; Swaminathan, - V.-D. (1983) Jensen, - Larry; Borges, - Marilyn (1986) शोधकर्त्ताओं के परिणाम प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के मध्य असमानता व्यक्त करते हैं।

महिलाओं ने, वर्तमान समय में, प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कार्य कुशलता को सिद्व किया है परन्तु इससे उनकी मॉं सम्बन्धी भूमिका से सम्बद्व बहुत सी समस्याओं को भी उन्मुखता मिली है। ऐसी मॉंये जो कि अलग–अलग क्षेत्रों की कार्यकारिता से सम्बद्व हैं, में अपने बच्चों के पालन–पोषण से सम्बन्धित भिन्न–भिन्न मान्यताओं की प्रबलता होती है। मॉं की कार्यकारी स्थिति में एक महत्वपूर्ण पक्ष कार्यावधि, भी है, सीमित समय में बच्चों के साथ अन्तःक्रिया के लिये अद्वितीय समय–व्यवस्था, बच्चों को एक सन्तुलित मानसिक विकास दे सकने में सक्षम होती हैं। प्रस्तुत शोध में प्रमुख समस्या यह थी कि मातृक पारम्परिक कार्यकारी स्थिति व मातृक अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति का किशोर बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? अध्ययन के परिणाम निश्चित रूप से यह स्पष्ट करते हैं कि पारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्व मॉंओं के बच्चों में, अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्व मॉंओं के बच्चों से ज्यादा विषादजनित लक्षणों का विकास परिलक्षित होता है।

शिक्षिका का कार्य यद्यपि स्त्री की परम्परागत छवि के सर्वथा अनुकूल माना जाता है तथा कार्यालय में कार्यरत स्त्री का कार्य अपरम्परागत छवि के अर्न्तगत आता है किन्तु प्रस्तुत अध्ययन के दौरान अलग–2 ऐसी मॉंओं से मिलने के उपरान्त यह पाया कि महिलायें जो कि बैंक इत्यादि कार्यालय में कार्यरत हैं, में अपने किशोर बच्चों के प्रति स्पष्ट पालन–पोषण सम्बन्धी दृष्टिकोण है जो कि उनके बच्चों को विषादजनित लक्षणों के प्रभाव से अपेक्षाकृत दूर रखता है परन्तु 'शिक्षिकाओं' के किशोर

बच्चों में ऐसे लक्षणों को अवश्यम्भावी रूप से देखा गया। इसके कारणों में कहीं ना कहीं उनमें अनेक बच्चों के साथ अन्तःक्रिया के फलस्वरूप व्याप्त स्वभावगत असंतुष्टता सम्बन्धी भाव, अपर्याप्त समय व्यवस्था इत्यादि कारण ही प्रतिदर्शित होते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है की अपारम्परिक कार्यकारी स्थिति की तुलना में पारम्परिक कार्यकारी स्थिति से सम्बद्ध मॉओं के किशोर बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास की प्रबलता रहती है।

अग्रगामी शोध के लिये सुझाव

1. वर्तमान शोधकार्य, माताओं के प्रतिदर्श को लेकर उनके किशोर बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास में, विशिष्ट मातृक स्थितियों के प्रभावों को सुनिश्चित करता है । यह विचार प्रस्तुत किया जाता है कि आगे किये जाने वाले शोधों में पिता के प्रतिदर्श का चयन कर, विशिष्ट पैतृक स्थितियों का प्रभाव किशोर बच्चों में विषादजनित लक्षणों के विकास पर देखना चाहिये।
2. आगे के शोधों में मॉ की कार्यकारी स्थिति के प्रभावित स्वरूप में, बच्चों के प्रति कार्यकारी मॉओं के संवेगात्मक रूझान सम्बन्धी विचलन को वर्तमान समय में शोधपरक बिन्दु बनाया जा सकता है।
3. मॉओं की कार्यकारी स्थिति के फलस्वरूप किशोर बच्चों में समायोजन की अभिवृत्ति को शोध समस्या का आधार बनाया जा सकता है।
4. मॉ की विभिन्न भूमिकाओं को देखते हुये, उनके जीवन में विभिन्न मॉगों की संरचनाओं तथा नियन्त्रण सम्बन्धी स्थितियों को, बच्चों के सन्दर्भ में उनकी मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति को शोध परक समस्या बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Allen L. Edwards, Experimental Design in Psychological Research Third ed., Mohan Primlani, Amerind Publishing Co. Pvt. Ltd., N-88 Connaught Circus, New Delhi-1, 1971.*
2. *Albert. N & Beck, A.T., Incidence of depression in early adolescent; A Preliminary study. Journal of youth and adolescence, 4, 301-307., 1975.*
3. *Blood, R.O., Long range causes and consequences of the employment of married women. J. Marriage Fam. 27, 43-47, 1965.*
4. *Beck, A.T., The development of depression; A cognitive model, In R. J. Friedman and M.M. Katz (Eds.), The psychology of depression Washington, D. C.; Winston, 1974.*
5. *Beck, A.T. & young J.E., College Blues Psychology Today, 12, 80-92, 1978.*
6. *Barnett, -Rosalind -C.; Marshall, -Nancy -L., Worker and Mother roles, spillover effects, and psychological distress; Women -and-Health; Vol. 18 (2), 9-40, 1992.*
7. *Fleege, U.H., Self-revelation of the adolescent boy Milwaukee: Bruce, 1945.*
8. *G.S. Hall : Adolescence (2 vols.), New York, Appleton-Century - Corfts, Inc., 1904.*
9. *Gallemore, J.L. & Wilson, W.P., Adolescent adjustment or affective disorders? American Journal of Psychiatry, 129, 608-612, 1972.*
10. *Iazzetta, V.B., Perceptions of mothers and daughters as they pertain to certain aspects of the self concept. Dissert. Abstr., 21, 3360-3361, 1961.*
11. *Inamdar, S.C.; Siomopoulas, G.; Osborn, M. & Bianchi, E. C., Phenomenology associated with depressed moods in adolescents. American Journal of Psychiatrys, 136, 156-159, 1979.*
12. *Jensen, -Larry; Borges, -Marilyn, The effect of maternal employment on adolescent daughters; adolescence, Vol. 21 (83), 659-666, Fal, 1986.*
13. *Lewinsohn, P.M., Clinical and Theoretical aspects of depression. In K.S. Calhoun. H.E. Adams and K.M. Mitchell (Eds.), Innovative treatment method in psychopathology; New York; Wiley 1974b.*
14. *Maccoby, E.E., Children and working mothers, children, 5, 83-89, 1958.*
15. *Meek, L.S., Effects of maternal employment on children evidence from research child develpm., 31, 749-782, 1960.*
16. *Montemayor, -Raymond; Clayton, -Mark -D., Maternal employment and adolescent development. Theory -Into-Practice, vol. 22 (2), 112-118, Spr. 1983.*
17. *Morgan, -Mark; Grube, -Joel -W., Consequences of maternal employment for adolescent behaviour and attitudes., Irish -Journal-of- psychology vol. 8 (2), 85-98, 1987.*
18. *Rao, -P. -Rama; Parvathi, -S.; Swaminathan, -V.- D., Study habits of adolescent boys and girls of employed and non employed mother: Psychological Studies. Vol. 28 (1), 44-47, Jan, 1983.*
19. *Richards, -Maryse -H.; Duckett, -Elena, The relationship of maternal employment to early adolescent daily experience: Child- Development; Vol.65 (1), 225-236, Feb., 1994.*
20. *Rutter, M., Sex differences in children's response to family stress. In E.J. Anthony & C. Koupernik (Eds.). The child in his family, New York Wiley, 1970.*
21. *Seligman, M.E.P., Helplessness; On depression, development and death. San Francisco, Freeman, 1975.*